बालसखा

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

लेख-सूची

चित्र-सूची

लेख-सूची

चित्र-सूची

(रङ्गीन चित्र)

सादे चित्र

नल-दमयन्ती (पुनर्मिलन)

बाल सखा

[illegible] १२] जूलाई १९२८—आषाढ़ १९८५ [संख्या ७

चाह

चाह नहीं है, राजा बनकर सब पर हुक्म चलाऊँ मैं ।
चाह नहीं है, योगी बनकर अटल समाधि लगाऊँ मैं ॥
चाह नहीं है, ज्ञानी बनकर विद्या-विभव दिखाऊँ मैं ।
चाह नहीं है, नेता बनकर सबको नीति सिखाऊँ मैं ॥
चाह नहीं है, कोई भी दुनिया में पदवी पाऊँ नाथ !
चाह यही है, भाई बनकर सदा ग़रीबों का दूँ साथ ॥

सोहनलाल द्विवेदी

———

अन्धा मेटकाफ़

अन्धे आँखों की कमी से हार नहीं मानते। वे कभी कभी ऐसे काम कर डालते हैं, जो आँखवाले भी नहीं कर सकते। अन्धों में राजा, विद्वान्, कवि, वकील, पुजारी सभी हुए हैं। विलायत का अन्धा जान मेटकाफ़ तो बड़ा मशहूर सड़क और पुल बनानेवाला हुआ है।

जान मेटकाफ़

उसका जन्म सन् १७१७ ई० में हुआ था। छठे बरस में चेचक से उसकी आँखें जाती रही थीं। उसके मा-बाप ग़रीब थे। स्कूल में भरती होते ही, आँखों की वजह से उसका पढ़ना छूट गया, पर वह वृक्षों पर चढ़ने, पानी में तैरने, घूमने-दौड़ने, घूसेबाज़ी-पहलवानी सबमें अपने साथियों को हराता रहा। वह दिन और रात में बराबर एक से काम कर सकता था। वह तैरने में यहाँ तक उस्ताद था कि नदियों की घूमती हुई लहरों में बड़ी आसानी से उतराता था। एक नदी बहुत गहरी थी। पर वह लोगों की खोई हुई चीज़ें उसकी तह से निकाल लाता था, और डूबते हुए लोगों को बचा लेता था। वह नाचने-गाने और बजाने में बड़ा चतुर था। जलसों पर उसका पहुँचना बड़ा ज़रूरी माना जाता था।

एक बार लंदन में एक परिचित सज्जन ने उसे अपनी गाड़ी में साथ चलने

को कहा। अन्धे ने जवाब दिया कि वह गाड़ी से आगे चल सकता है। दूसरे दिन वह पैदल और वह महाशय गाड़ी पर रवाना हुए। इस तरह जितने दिन [illegible] अन्धा हमेशा आगे रहा।

अन्धा होते हुए भी वह एक सुन्दर लड़की को बहका कर भगा ले गया और उसके रहने के लिए उसने एक पुराने मकान को खोद कर और नदी से [illegible] निकाल कर नया मकान बनाया।

पहले उसने गाड़ी बनाकर किराये पर चलाई। इससे उसे दो साल तक [illegible] हुआ। फिर उसने चल फिर कर मछली का कारबार शुरू किया। एक बार वह चार घोड़ों पर मछली लादे बर्फ़ से ढके हुए दरिया को पार करने [illegible]। घोड़ों के बोझ से बर्फ़ हट गया। वह बड़े संकट में पड़ गया, क्योंकि वहाँ और कोई नहीं था। किसी तरह घोड़ों को उसने निकाला। बाहर आने [illegible] घोड़ा भाग गया। तीन घोड़े रह गये और एक घोड़े का बोझ। [illegible] अकेले ही बाक़ी घोड़ों को लादा और बाज़ार को ले गया। एक [illegible] घोड़े समेत उँचाई से एक नदी में गिर पड़ा, पर उसमें से भी [illegible] आया!

[illegible] ईसवी में स्काटलेंड में बलवा होगया। इससे वह अँगरेज़ी फ़ौज [illegible] लड़ने गया और हमेशा आगे ही रहा।

[illegible] जाता वहीं कुछ न कुछ सीखता। लड़ाई से लौट कर उसने [illegible] ऊन का रोज़गार किया। वह कई बार स्काटलेंड से याकशायर [illegible] ऊन का व्यापार करता था। उसने घोड़ों का व्यवसाय किया तथा [illegible] और घास का भी। जो माल वह ख़रीदता था, केवल छूकर उसमें [illegible] और बुरा बतला देता था। उँगली से छूकर घोड़े को परख लेता था। [illegible] में भर कर यह जान लेता था कि पेड़ में कितनी लकड़ी होगी, [illegible] ढेर में किस क़दर घास बैठेगी।

मेटकाफ़ ने पुरानी पड़ी हुई सड़कों के बनवाने का भी काम लिया। आपके सुनकर ताज्जुब होगा कि वह पुल और सड़कों का ठेका किस तरह करता था। वह और किसी की मदद नहीं लेता था। केवल अपनी छड़ी के सहारे पथरीली या भुरभुरी ज़मीन को ठोक-बजा कर समझ लेता था। वह नदी के दलदल में भी उसी के सहारे सड़क बनाने के ख़र्च का अन्दाज़ कर लेता था। इस काम में वह कभी ग़लती नहीं करता था। उसका काम हमेशा ठीक समय पर पूरा हो जाता था, केवल एक बार उसका काम पिछड़ गया था, और वह भी उसकी ग़लती से नहीं।
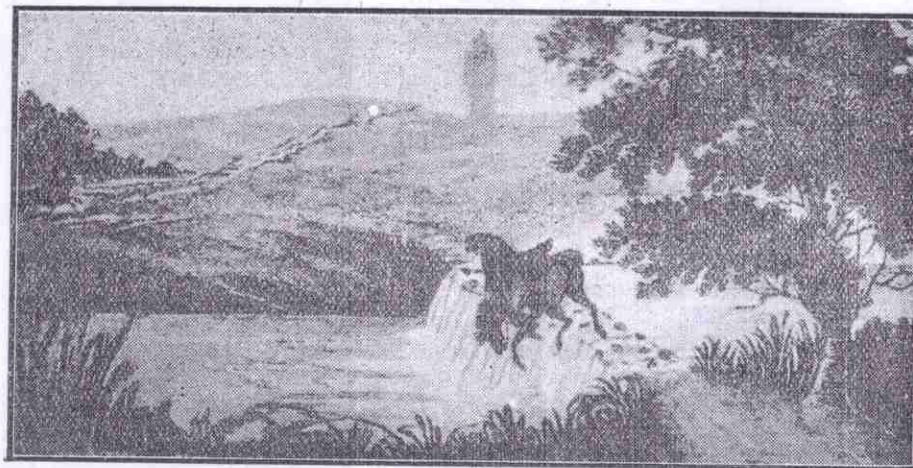
अन्धा नदी में गिर पड़ा

उस समय तक और बड़े बड़े सड़क बनानेवाले पैदा नहीं हुए थे, इस लिए उसे ख़ुद ही उनका नक़शा भी बतलाना पड़ता था। मज़ा यह था कि उसका ठेका और सबसे सस्ता होता था। पहले ठेके में उसने बहुत कम दा[म] लिया था। और किसी को यही समझ में नहीं आया कि सड़क के लि[ए] मसाला कहाँ से इतनी सुविधा से आ जायगा। मेटकाफ़ ने उसी समय बतल[ा]

दिया कि वह कहाँ से पत्थर आदि लायेगा, और फिर करके भी दिखा दिया। कमी पड़ जाने पर उसे किसी ने सामान नहीं दिया। इस पर वह ज़रा भी ग़ुस्सा न हुआ। अपने आदमियों को भेज कर दूर से पत्थर मँगवा लिया।

एक लम्बी सड़क को समय के अन्दर बना देने से सबने इनकार कर दिया, वह काम भी मेटकाफ़ ने लेकर पूरा करके दिखला दिया। ४०० आदमियों से अकेले काम लेकर एक बड़े भारी दलदल पर उसने ऐसी मज़बूत सड़क बना दी जो १२ बरस तक बिलकुल ख़राब न हुई।

उसे ज़मीन के अन्दर का इतना ज्ञान था कि एक बार सर जान के पार्क में जाकर चुपचाप पत्थर खोजने के लिए एक सुरंग की। सौभाग्य से वहाँ उसे बड़ी तादाद में पत्थर मिल गया। सर जान ने अन्धे की अक़्ल पर ख़ुश हो कर उसे पत्थर ले लेने की आज्ञा दे दी।

एक सड़क को बनाते समय उसने अपने आदमियों से कहा कि यह ज़मीन कुछ और तरह की मालूम होती है। बाद में खोदने पर सचमुच उसके नीचे पत्थर की पुरानी सड़क निकली, जिससे उसे बड़ी मदद मिली।

वह सन् १८१० में ९३ बरस का होकर मरा। उस समय उसके ९० नाती-पोते मौजूद थे।

शम्भुदयाल सक्सेना, साहित्य-रत्न

बरसात

फिर आया बरसात का मौसम, पानी बरसा रिम झिम रिम झिम।
काले बादल घूम रहे हैं, गोया हाथी झूम रहे हैं।
ठंडी ठंडी हवाएँ आएँ, दरिया की मौजें लहराएँ।
लहरें लेती है हरियाली, झूम रही है डाली डाली।

कुछ ऐसे बरसे हैं बादल, बसती जङ्गल हो गये जल-थल।
बह निकले हैं नाले नदियाँ, भर गईं झीलें ताल-तलैयाँ।
सब्ज़े से मैदान हरे हैं, फूलों से गुलज़ार भरे हैं।
काली कोयल बोल रही है, कन्द हवा में घोल रही है।
कुञ्जों में छिपकर गाती है, अपने को कम दिखलाती है।
कहने को है काली काली, लेकिन है चिड़िया गुनवाली।
मीठे सुर में गाती है वह, सबके दिल को भाती है वह।
दिन भर गाएँ चारा खाके, दूध बहुत देती हैं आके।
बछड़े ख़ुश हैं गाएँ ख़ुश हैं, बच्चे ख़ुश हैं माएँ ख़ुश हैं।
बाग में रहते हैं रखवाले, फूस की एक मड़ैया डाले।
दिन भर शोर मचाना उनको, और तोतों का उड़ाना उनको।
तोते आमों को खाते हैं, खटका पाकर उड़ जाते हैं।
आम लगे हैं पीले पीले, मीठे मीठे और रसीले।
देखे से जी ललचाता है, मुँह में पानी भर आता है।
जामुन भी है काली काली, मुँह काला कर देनेवाली।
आओ चलकर बाग़ में खाएँ, कुछ भाई बहनों को लाएँ।
पेड़ों में वह झूला डाले, झूल रहे हैं आमोंवाले।
हम भी आओ झूला डालें, ऊँचे ऊँचे पैंग बढ़ालें।
सावन और मलारें गाएँ, बरखा ऋतु का लुत्फ़ उठाएँ।
आज के दिन कैसे ख़ुश हैं हम, कैसा अच्छा है यह मौसम।

श्याममोहनलाल 'जिगर' बी० ए०

गवैये कीड़े

मुँह से हम खाना खाते हैं और बोलते हैं। पर कीड़े मुँह से केवल खाना खा सकते हैं, बोल नहीं सकते। बात यह है कि ये मुँह से साँस नहीं ले सकते। और जो मुँह से साँस नहीं ले सकता वह मुँह से बोल भी नहीं सकता। यही कारण है कि हम तितली, चींटी, दीमक आदि को चुपचाप काम करते देखते हैं। कभी इनको बोलते नहीं सुनते।

साँस लेने के लिए कीड़ों के बगल में या कमर पर सूराख़ बने होते हैं। जैसे वंशी में फूँकने से आवाज़ निकलती है वैसे ही इन सूराखों से हवा निकाल कर कुछ धीमी आवाज़ पैदा कर सकते हैं। तुमने शहद की मक्खी को भन भन करते सुना होगा, वह इसी तरह बोलती है।

पिँजड़े में झींगुर गा रहे हैं

झींगुर और टिड्डे भी आवाज़ पैदा करते हैं। पर उन्हें बीन बजानेवाले न कह कर सारङ्गी बजानेवाले कहें तो ज़्यादा ठीक होगा। क्योंकि ये अपने शरीर के एक अङ्ग को दूसरे पर रगड़ कर आवाज़ पैदा करते हैं। स्पेन देश के झींगुर इस प्रकार की सारङ्गी बजाने में इतने निपुण होते हैं कि लोग उन्हें पिँजड़ों में पालते हैं।

अब यह जानना चाहिए कि ये कीड़े एक अङ्ग को दूसरे पर रगड़ कर सुरीली आवाज़ कैसे पैदा कर लेते हैं? तुमने टिड्डे को किसी पौधे पर बैठे देखा होगा। और शायद यह भी ग़ौर किया हो कि जब वह पिछली जाँघों को आगे की बन्द टाँगों पर रगड़ता है तो आवाज़ पैदा होती है। उसकी टाँगों को खुर्दबीन में देखने से यह भेद खुल जाता है। उसकी पिछली जाँघों में नन्हीं गाँठों की एक क़तार होती है। आगे की टाँगों की एक नस में जब यह क़तार रगड़ खाती है तभी आवाज़ पैदा होती है। झींगुर की पिछली जाँघों में नन्हें नन्हें दाँते से होते हैं। शायद इसी से उसकी आवाज़ ज़्यादा सुरीली होती है। इसी प्रकार कुछ कीड़े पंखों को आपस में रगड़ कर और कुछ पंखों को टाँगों पर रगड़ कर आवाज़ पैदा
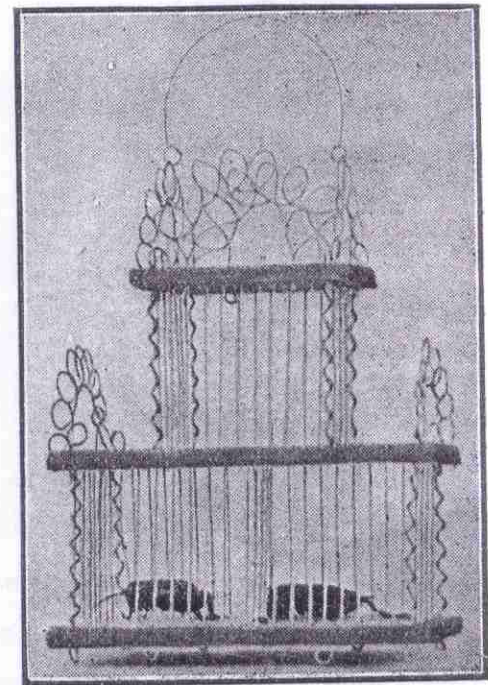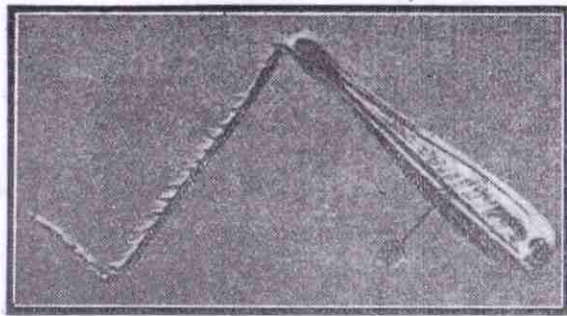
टिड्डे की टाँग
तीर से वह हिस्सा दिखाया गया है जो रगड़ खाने से बोलता है।
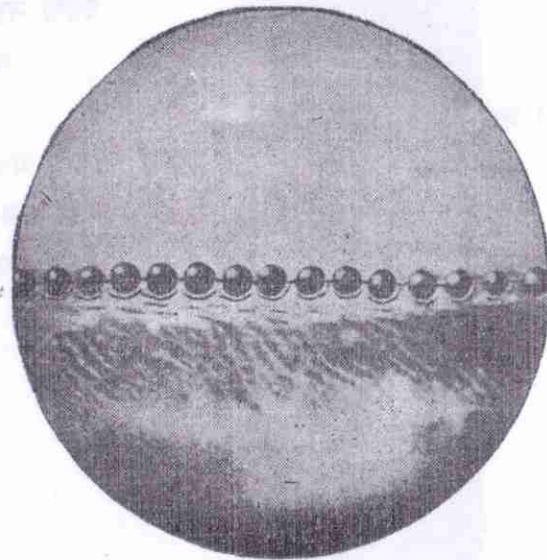
टिड्डे के टाँग की गांठें

करते हैं। शायद मच्छड़ भी इन्हीं में से किसी एक तरीक़े को काम में लाकर अपनी सुरीली आवाज़ पैदा करता है।
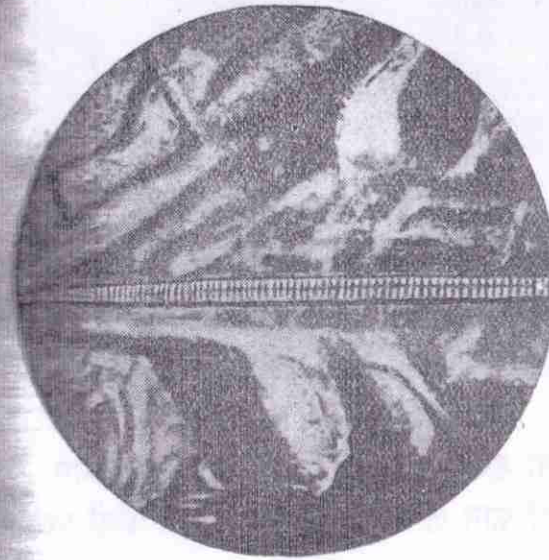
मौसम का असर जैसे आदमियों पर पड़ता है, वैसे ही कीड़ों पर भी पड़ता है। झींगुर को अँधेरा पसन्द है। दिन भर वह चुप रहता है। जब शाम होने लगती है तो बोलना शुरू करता है। टिड्डे को अँधेरा अच्छा नहीं लगता, वह सुनहली धूप में ख़ूब मस्त होकर अपनी सारङ्गी बजाता है। जब बहुत से झींगुर या टिड्डे एक साथ सारङ्गी बजाते हैं तो उनकी आवाज़ मीलों तक सुनाई पड़ती है।

झींगुर की टाँग के दांते

ब्राजील देश में एक प्रकार के कीड़े होते हैं। उनकी कमर पर नन्हाँ सा ढोल बना होता है। उसी को वे बजाते हैं। कहते हैं उन कीड़ों की आवाज़ रेल की सीटी के समान सुनाई पड़ती है।

हम इन कीड़ों का गाना सुनकर ख़ुश होते हैं। पर शायद अधिकांश कीड़े अपना गाना नहीं सुन सकते। सुनें कैसे, उनके कान तो होते नहीं। ब्राजील के कीड़ों को क्या पता कि वे रेल की सीटी के समान आवाज़ पैदा करते हैं। लेकिन झींगुर और टिड्डे के बारे में पता चला है कि वे सुन सकते हैं। उनके

घुटनों पर या कमर के पास जहाँ पिछली टाँगें मिलती हैं नन्हें नन्हें
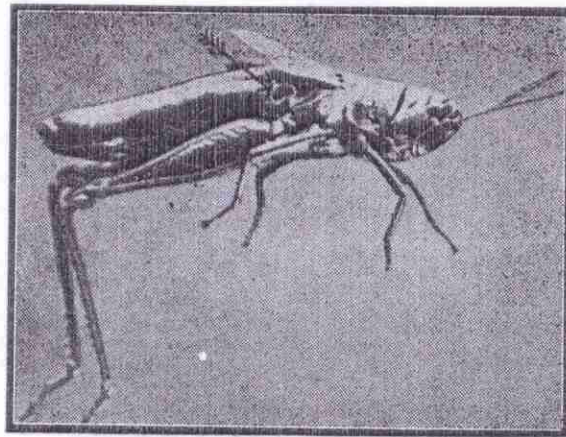
तीर से टिड्डे का कान दिखाया गया है

सूराख होते हैं। वे ही सूराख उनके लिए कान का काम करते हैं। जहाँ सारङ्गी बजती है वहीं कान लगा कर विधाता ने इन कीड़ों पर सचमुच बड़ी कृपा की है।

मेरी नाव

हमने है इक नाव बनाई
बहुत सबों के मन को भाई
जब हम गंगा गये नहाने
उसको सँग ले गये बहाने ॥१॥

रखे फूल कुछ उसमें हमने
लगी और वह सुन्दर लगने
फिर धीरे से जल में उसको
डाल दिया हमने बहने को ॥२॥

गंगा की मीठी कल कल में
उसके उजले बहते जल में
देखो, वह बहती जाती है
हमसे दूर भगी जाती है ॥३॥

प्यारी गंगे ! धीरे बहना
देखो, करना मेरा कहना
यदि तुम बहीं ज़ोर से प्यारी
डूब जायगी नाव हमारी ॥४॥

वह देखो, वह देखो, भाई
पड़ती नहीं ठीक दिखलाई
नाव बह गई दूर हमारी
नहीं मिलेगी अब वह प्यारी ॥५॥

कहाँ जायगी भला अकेली ?
नहीं संग में सखी-सहेली ?
चली जायगी, डर क्या इसको
नानी या ईश्वर के घर को ॥६॥

वीरेश्वरसिंह
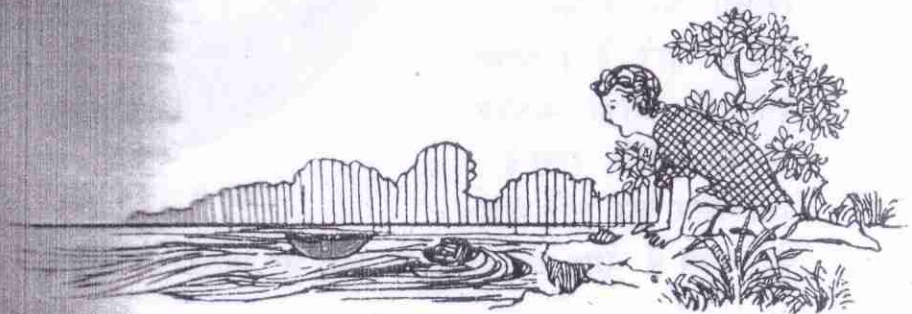
स्याही के धब्बों का खेल

स्याही के धब्बों का खेल बड़ा आसान है। एक सादा काग़ज़ लो और उसे इस तरह मोड़ो कि ऊपर से नीचे तक एक सीधी रेखा बन जाय। इस रेखा पर एक बूँद स्याही गिरा कर काग़ज़ को फिर उसी तरह मोड़ो और ऊपर से अँगूठे के नाखून से दबा दबा कर स्याही को चारों तरफ़ फैला कर पेड़ की सी शकल बनाओ। इस बात की कोशिश करो कि यह शकल किसी न किसी पेड़ से मिलती-जुलती हो। उदाहरण के लिए दो ऐसे चित्र दिये जा रहे हैं।
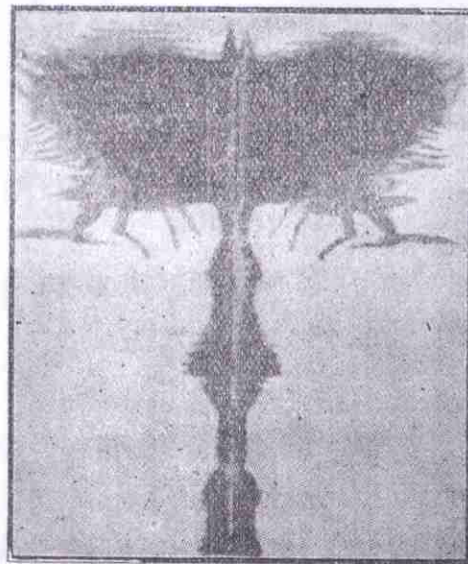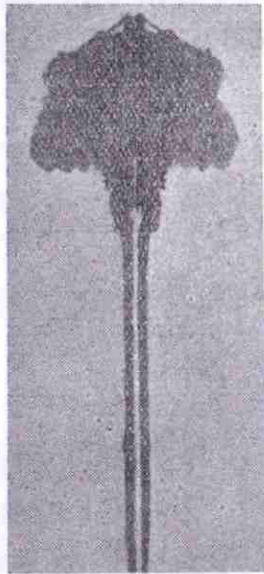
एक साथ बहुत से बालक बैठकर ऐसे चित्र बना सकते हैं। जिसका चित्र किसी पेड़ से अधिक मिलता-जुलता हो उसी की जीत समझनी चाहिए। पहेलियों के जवाब के साथ बालक हमारे पास भी ऐसे चित्र भेज सकते हैं। जो चित्र सबसे अच्छा समझा जायगा वह बाल-सखा में छपेगा और उसके भेजनेवाले को एक सुन्दर पुस्तक इनाम दी जायगी।

नेकी का बदला

[लेखक—श्रीयुत सुदर्शन]

(१)

एक शहर में जुम्मन कबाड़िया रहता था। वह बड़ा ग़रीब था पर ईमानदार भी बड़ा था। अपने ग्राहकों से कम वा अधिक दाम न लेता था। [illegible] कबाड़िये आठ आने की चीज़ दो रुपये में बेचा करते थे किन्तु जुम्मन [illegible] अधिक नफ़ा लेना पाप समझता था, और एक रुपये की चीज़ एक रुपया [illegible] आना से अधिक की कभी नहीं बेचता था। इसका परिणाम यह हुआ कि [illegible] दुकान खूब चल निकली। शुरू शुरू में तो वह म. में रहा और उसका [illegible] उसके घर का गुज़ारा होता गया। मगर एक दिन ऐसा आया जब उसके [illegible] में एक पैसा भी न रहा और वह रोटी के टुकड़े टुकड़े को भी मुहताज होगया। बेचारा सारे सारे दिन दुकान पर बैठा रहता था। मगर न कोई ग्राहक आता था, न कोई चीज़ बिकती थी। मकान का मालिक किराया माँग माँग कर तंग आगया। पर जुम्मन के पास कुछ होता, तो देता। हार कर उसने [illegible] दिया कि यदि बीस तारीख़ तक तुमने किराया न चुका दिया तो मैं [illegible] कर दूँगा। तुम्हें दुकान ख़ाली कर देनी पड़ेगी। यह सुनकर जुम्मन

के चेहरे का रंग उड़ गया। मगर इससे क्या होता था? सोचा, जो होगा, देखा जायगा। अब तो लाज परमात्मा ही के हाथ है।

(२)

अठारह तारीख़ तक बेचारे जुम्मन के पास किराया न जमा हुआ। जो चार पैसे आते थे खाने पर ख़र्च हो जाते थे। वह सोच में था कि क्या करें और क्या न करें। उसी अठारह तारीख़ की शाम को एक अमीर आदमी उसकी दुकान पर आया और बहुत देर तक उसकी चीज़ें देखता रहा। मगर उसे कोई भी चीज़ पसन्द न आई और वह वापिस जाने लगा। एकाएक उसकी नज़र अल्मारी के ऊपर रखी हुई एक सन्दूक़ची पर पड़ी। वह जाते जाते रुक गया और जुम्मन से बोला "वह सन्दूक़ची कैसी है? ज़रा दिखाओ तो।"

जुम्मन ने सन्दूक़ची उतार कर उसके हाथ में रख दी और कहा, "देख लीजिए। किन्तु मैं इसे बेच नहीं सकता।"

अमीर आदमी सन्दूक़ची देखकर बड़ा ख़ुश हुआ। यह सन्दूक़ची न लकड़ी की थी न लोहे की; किन्तु थी बड़ी ख़ूबसूरत और किसी विचित्र ही धातु की बनी हुई थी। इसके पेंदे पर किसी देवता की मूर्त्ति बनी हुई थी जिसके मुँह से आग की ज्वाला निकलती मालूम होती थी। उस अमीर ने कहा—"बोलो इसके लिए क्या दूँ?"

जुम्मन ने उत्तर दिया, "मुझे शोक है, मैं यह संदूक़ची नहीं बेच सकता।"

अमीर आदमी ने कहा—"मालूम होता है तुम इस तरीक़े से इसकी क़ीमत बढ़ाना चाहते हो। अच्छा बोलो क्या दूँ? मुझे यह चीज़ पसन्द है।"

जुम्मन ने जवाब दिया, "आपका ख़याल ग़लत है। मैं इसे सचमुच नहीं बेच सकता।"

"पचीस रुपये।"

"नहीं।"

"पचास रुपये?"

"जी नहीं।"

अमीर आदमी ने थोड़ा रुककर कहा—"चलो मैं एक सौ रुपया देने को तैयार हूँ।"

उस समय जुम्मन के लिए एक एक रुपया मोहर थी। अगर उसे सौ रुपया [illegible] जाता तो उसका सारा दुःख दूर हो जाता किन्तु उसने फिर भी यही जवाब दिया—"जनाब सची बात यह है कि यह सन्दूक़ची मेरी नहीं है। फिर मैं [illegible] बेच सकता हूँ।"

अमीर आदमी ने कहा—"सम्भव है तुम इसे बेचने को तैयार हो जाओ! [illegible] में एक बार कल भी आऊँगा। कल तक तुम्हें जो कुछ सोचना हो [illegible]।"

[illegible] अमीर आदमी दुकान से निकला और अपनी गाड़ी में बैठकर [illegible]।

(३)

[illegible] जब जुम्मन घर गया तो अपनी स्त्री से बोला—"तुम्हें याद होगा [illegible] हुए हमारे पड़ोस में एक लड़की रहती थी जिसका नाम नईमा [illegible] मा मरो थी तो उसे हमने कई सप्ताह अपने यहाँ ठहराया था।"

जुम्मन की स्त्री ने जवाब दिया, "हाँ, हाँ, मुझे यह घटना बड़ी अच्छी तरह याद है।"

जुम्मन ने कहा—"शायद तुम्हें यह भी याद होगा कि वह अपनी एक [illegible] हमारे पास छोड़ गई थी जो उसने आज तक नहीं मँगवाई। आज उसे [illegible] अमीर आदमी ख़रीदना चाहता था मगर मैंने उसे नहीं बेचा।"

"क्या देता था?"

"सौ रुपया देता था। शायद इससे ज़्यादा भी दे देता।"

"तुमने बड़ी भूल की। उसे बेच देते तो वारे न्यारे हो जाते। पैसे पैसे के लिए दूसरों का मुँह देखना पड़ता है। हमसे इतनी ईमानदारी कैसे निभ सकेगी और अब उस लड़की को उसकी ज़रूरत भी न होगी। और यह भी ते पता नहीं कि वह जीती है वा मर गई।"

जुम्मन ने जवाब दिया, "यह सब कुछ ठीक है। मगर जो चीज़ हमारी नहीं उसे हम कैसे बेच दें?"

"और फिर परसों किराये का क्या करोगे?"

"जो होगा देखा जायगा।"

"ईमानदारी न छोड़ोगे किन्तु बदनामी सह लोगे?"

"बेईमानी से बदनामी हज़ार दर्जे अच्छी है। बदनामी सह लूँगा, प बेईमानी तो मुझसे कभी न होगी।"

(४)

वे दोनों ये बातें कर ही रहे थे, कि इतने में दरवाज़े पर किसी ने आवा दी। जुम्मन ने दरवाज़ा खोला तो इतने में एक स्त्री अन्दर दाखिल हुई जुम्मन ने उसे देखते ही पहचान लिया। यह वही नईमा थी, जिसक संदूकची वह अमीर आदमी ख़रीदना चाहता था।

नईमा ने कहा, "तुम्हारे पास मेरी एक धरोहर पड़ी है।"

जुम्मन ने उसी समय जाकर दूकान खोली और वह सन्दूकची लाक नईमा के हाथ पर रख दी। नईमा ने उसे खोलकर उसके पेंदे पर हाथ फे और जुम्मन से कहा—"ज़रा चिराग़ तो लाना।"

जुम्मन चिराग़ लाया और नईमा ने उस पर बनी हुई तसवीर के सिर प हाथ रख कर ज़ोर से दबाया। पेंदा दबने के साथ ही ऊपर उठ आया औ उसके अन्दर से एक काग़ज़ निकला। उसमें लिखा था कि हमारे मकान में ह

[illegible] नीचे एक बर्तन दबा है उसमें कई हज़ार के गहने पड़े हैं। जब तुम्हें ज़रूरत [illegible] निकाल लेना।

[illegible] नईमा की मा के हाथ का लिखा हुआ था। नईमा ने अपने मकान का [illegible] तोड़ा और वृक्ष के नीचे की ज़मीन खोदी तो सचमुच गहनों से भरा [illegible] बर्तन निकल आया। अब उसके सौभाग्य में क्या शक था? ख़ुशी से [illegible] लगी।

(५)

[illegible] देखकर जुम्मन ने नईमा से कहा—"बेटी! आज एक अमीर आदमी [illegible] लिए एक सौ रुपया दे रहा था किन्तु मैंने इसे बेचने से साफ़ इनकार कर [illegible]। अगर बेच देता, तो तुम्हारा बड़ा नुक़सान होता।" नईमा इस ईमानदारी [illegible] बड़ी ख़ुश हुई और कहने लगी कि यदि आप यह सन्दूकची बेच देते तो [illegible] नुक़सान क्या बिलकुल सत्यानाश ही हो चुका था। मुझे कल मेरी मौसी ने [illegible] कि तुम्हारे पास जो सन्दूक़ची थी उसकी तह में कोई काग़ज़ है। मुझे याद [illegible] कि इसमें तुम्हारे लिए कोई ख़ास बातें लिखी हैं और आश्चर्य नहीं कि [illegible] तुम्हारा भाग्य पलटा खा जाय। इसीलिए मैं यहाँ आगई। किन्तु मेरा [illegible] कि अगर आप ऐसे ईमानदार न होते तो यह दौलत मुझे कभी न मिल [illegible]। इसलिए मैं चाहती हूँ कि इसमें से आधे गहने आप ले लें।

[illegible] ने बहुत इनकार किया किन्तु नईमा ने न माना और जुम्मन को [illegible] आधा गहना दे दिया। दूसरे दिन जब वह गहना बेचा गया तो [illegible] साढ़े सात सौ रुपया प्राप्त हुआ।

[illegible] वह अमीर आदमी के हाथ सन्दूकची बेच देता तो उसे केवल एक ही [illegible] मिलता।

[illegible] बच्चो! ईमानदारी बड़ी चीज़ है। जो ईमानदार है उसका दुनिया [illegible] मान है। और बेईमान को न कोई पूछता है, न पास बैठने देता है। इस-[illegible] ईमानदार बनो और पराये सोने को मिट्टी समझो। फिर देखो, दुनिया में [illegible] कितनी इज्ज़त होती है?

———

सुबह

सुबह का वक़्त है कैसा सुहाना, मनोहर है बहुत चिड़ियों का गाना।
कहीं श्यामा अलापें भर रही है, कहीं भिंगराज सुध-बुध हर रही है।
चहक बुलबुल की छाई है चमन में, पपीहा "प्यू कहाँ" बोले है वन में।
कहीं आवाज़ कुक्कुट की है आती, कहीं कोयल "कुहू" की रट लगाती।
नई कलियाँ हैं रुक रुक मुसकरातीं, दबे पाँओं हवा ठंडी है आती।
उधर मुल्ला ने सोतों को जगाया, नमाज़ी चौंक कर मस्जिद में आया।
उधर घण्टों की धुन मन्दिर में छाई, कहीं धुन संख की देती सुनाई।
कहीं दरशन के प्यासे छक रहे हैं, कहीं प्रेमी विरह में फुक रहे हैं।
धुला मुँह ओस से फूलों फलों का, खिला मुँह सारे कमलों के दलों का।
हुई तारागणों की जोत ठंडी, कमोदन की हुई है कान्ति मन्दी।
हुकारा दे रही है मात गायें, कि बछड़े आके थन से मुँह लगायें।
कहीं दूध मथ रही है व्रज-बाला, खटोले पर पड़ा है पास लाला।
कृषक काँधे पे अपना हल लिये है, और जोड़ी बैल की आगे किये है।
उधर मछुवे ने जाल अपना सँभाला, इधर माँझी ने भी जल में बाँस डाला।
नये सिर से पड़े हैं प्राण सबमें, सबेरे ने है फूँकी जान सबमें।
किसी घर में है चक्की घड़घड़ाती, कहीं आवाज़ धानकूटन की आती।
यही है सबसे अच्छा वक़्त भाई, इसी में होती है अच्छी कमाई।
जो सोता है सो खोता है सदाही, प्रकृति देती है इसकी गवाही।
अगर संसार में यश है कमाना, अगर आदर्श है कुछ कर दिखाना।
तो उठो दो घड़ी तड़के बराबर
सुनो यह बात प्यारो मन लगाकर॥

प्रेमसखा

सहेली

मेरी प्यारी हन्ना

[लेखक—श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक]

प्यारे बच्चो! हमारे पवित्र देश—भारतवर्ष—का बम्बई सबसे अधिक उपयोगी बन्दरगाह है। यहाँ से बड़े बड़े जहाज़ तथा स्टीमर देश-[illegible] और द्वीप-द्वीपान्तरों को जाते हैं। बम्बई से यदि स्टीमर में बैठकर [illegible] करें तो पन्द्रह दिनों में इटली के प्रसिद्ध नगर, वीनिस, पहुँचते हैं। [illegible] में बैठकर दूसरे दिन प्राग नामी नगर में पहुँच सकते हैं। तुम अपने [illegible] अध्यापक से सहायता लेकर नक़शे में इस नगर को देखो।

[illegible] के चेको स्लोवाकिया नामी छोटे से देश की यह राजधानी है। आज-[illegible] रहता हूँ और अगस्त तक यहीं रहूँगा। इस नगर के बाहर पहाड़ियों [illegible] बस्ती है। यहाँ नीरोग जलवायु में मैं एक मकान में रहता हूँ।

[illegible] बात यह है कि यहाँ कोई मेरी बोली नहीं समझता। जिस घर में मैं [illegible] में पाँच वर्ष की छोटी लड़की हन्ना रहती है। यह लड़की मेरे साथ [illegible] है। हम दोनों कमरे में ख़ूब नाचते कूदते हैं। यह मेरा एक अक्षर नहीं [illegible] और मैं इसकी चेख भाषा नहीं समझता पर तिस पर भी हम दोनों ख़ूब [illegible] बातें करते हैं। मैं इसके लिए बाज़ार से फल, चोकोलेट लाता हूँ। यह [illegible] कमरे में आती है। कहती है—"पान प्रोफेसर! पान प्रोफेसर!!" चेख [illegible] पान 'महाशय, अथवा 'मिस्टर' को कहते हैं। सो यह मुझे मिस्टर प्रोफ़ेसर

गुड़ियों का ब्याह

बैठी हैं हम खुश होकर,
और सभी सुध-बुध खोकर,
गुड़ियों का अब होगा ब्याह,
कैसा न्यौता होगा वाह ।

देखो है बरात आती
सजी हुई कैसी भाती,
दो अच्छा सा जनवासा
बाँट बतासा दो खासा ।

अब देखो गुड्डा आता
धीरे धीरे शरमाता,
गुड़िया नीचे झुकती है
चलती कुछ कुछ रुकती है ।

दोनों का हो गठबन्धन
खुशी हो रहे वे मन मन,
बिदा करें अब दुलहिन को,
कपड़े गहने दें इनको—

देखो बहनो मत रोओ
आँसू से मुँह मत धोओ,
यह तो है अच्छा अवसर,
खश हो लो इससे मन भर ।

गुड़िया को कुछ सिखलाओ,
राह अनोखी दिखलाओ,
हाँ बिटिया जब घर जाना
करना तुम मत मनमाना ।

सास ससुर को खुश करना
आज्ञा सबकी शिर धरना,
झूठी बातें मत करना
हठ करने से नित डरना ।

ऐसे ऐसे करना काम
जिससे जग में होवे नाम,
सावित्री सीता होना
घरवालों का दुख खोना—

जाओ जाओ तुम अब जाओ
जल्दी से वापस आओ,
नहीं भूलना हमें कभी
याद करेंगी तुम्हें सभी ।

आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव

लम्बे केश

ज़रा इस लड़की के केश तो देखो सिर से एँड़ी तक पहुँचे हुए हैं। लम्बाई में पूरे पाँच फ़ीट हैं। इस लड़की का कहना है कि मैं अपने बालों में रोज़ कंघो करती हूँ, बालों के सिरों को जहाँ से उनमें शाख फूटने लगती है, कैंची से हमेशा काट देती हूँ। यही कारण है कि मेरे बाल इतने लम्बे हो गये हैं। इस लड़की का यह भी कहना है कि जो लड़कियाँ इन दो बातों पर ध्यान रखेंगी उनके बाल भी इसी तरह खूब लम्बे हो जायँगे। बालों को कभी कभी खुला भी रखना चाहिए। उनको हमेशा बाँधे रखना ठीक नहीं है। इस लड़की का नाम फ़्रांसिस स्ट्रीन है। यह आयर्लेंड की रहने-वाली है।
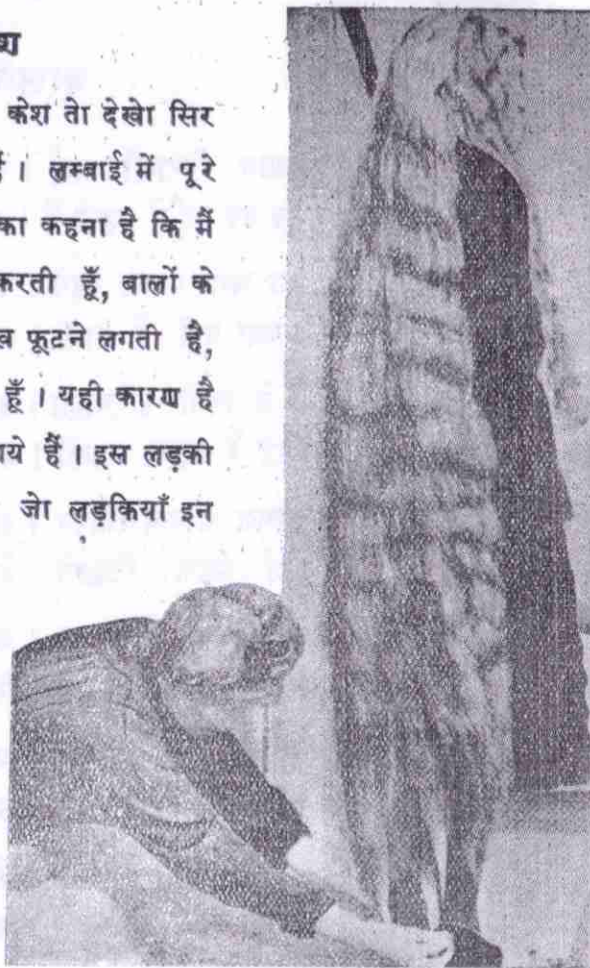
पाँच फ़ीट लम्बे बाल

लड़कियों से दो बातें

[illegible] लड़कियो,

[illegible] संसार में क्यों आई ? तुम्हें क्या करना है ? देश के लिए तुम क्या भलाई-बुराई कर सकती हो ? तुमसे ये बातें किसी ने नहीं [illegible]।

[illegible] कोई पूछता। इस देश ने तो तुम्हारा काम इतना ही समझा है कि तुम [illegible] छोटे बच्चों को देखा करो। भाई के हाथों चपतें खाओ। घर का काम-[illegible]। खेल-कूद की अवस्था में ससुराल चली जाओ। विद्या पढ़ने की [illegible] बन बैठो। तुम्हारा आदि-अन्त इतना ही है।

[illegible] नहीं समझते कि देश तुम्हें इस तरह अधिक रखना चाहता है। सबूत ? [illegible] पाठशालायें, तुम्हारे कालेज, तुम्हीं में से कुछ लड़कियों का विलायत [illegible] इत्यादि।

[illegible] तुम जानती हो कि तुम्हीं सी एक कन्या सीता भी थीं। सभी [illegible] कि तुम सबकी सब सीता ही बनो। लेकिन जनक से पिता व मिथिला-[illegible] रहे ? फिर राम से वर कहाँ मिलेंगे ?।

[illegible] भी तुम्हीं में से हुई थीं। अच्छे अच्छे देवता उनसे ब्याह करना [illegible] किन्तु उन्होंने रुपया, पैसा, लत्ते, कपड़े, सूरत, शकल थोड़ी चाही। [illegible] महादेव बड़े स्वार्थत्यागी हैं। समुद्र मथने पर अमृत व विष दोनों [illegible] अमृत पीने को सब तैयार हुए। विष पीकर सबों की रक्षा कौन [illegible] महादेवजी ने ही तो विष पी डाला। ऐसा वर अब भी मिल सके तो [illegible] की तरह तप कर सकती हो। तुम सब कुछ हो सकती हो। मीरा, [illegible] सावित्री, अहल्या—ये सब भी तो लड़कियाँ थीं, ये वैसी हो सकीं तो [illegible] नहीं हो सकतीं।

तुम्हारे लिए सीता, सती, सावित्री की कहानियाँ लिखते लिखते बरसों हो गये। हम भी अब यही बातें बार बार नहीं लिखना चाहते। हम चाहते हैं कि तुम्हें ऐसी शिक्षा मिले जिससे तुम जीवन का अर्थ समझ जाओ।

तुम्हें ऐसा अच्छा शरीर क्यों दिया गया है? तुम्हें ऐसी तीव्र बुद्धि क्यों दी गई है? तुम्हें इतने गुणों से जो सजाया तो तुमसे ईश्वर, प्रकृति, संसार और तुम्हारा देश क्या चाहते हैं?

यदि कोई कन्या—बाल-सखा की ग्राहिका—हमको इन प्रश्नों का उत्तर चार महीने के अन्दर दे सके तो जिसका उत्तर सबसे अच्छा और बिना किसी की सहायता के हो हम उसका नाम बड़े बड़े अक्षरों में छाप दें और दो अच्छी पुस्तकें या ५) उसे इनाम में दें।

नन्दन बी० ए०

दियासलाई का खेल

बीच की अँगुली के नाखून पर एक इस्तेमाल की हुई दियासलाई रखो और अगल बगल की दोनों अँगुलियों से उसे दबाकर तोड़ने की कोशिश करो। बहुत कम लड़के ऐसे होंगे जो इस तरह दियासलाई तोड़ सकेंगे।

बरसात

है बरसात निराली आई। बादल के दल के दल लाई।
टप टप टप बूँदें पड़ती हैं। मानों पृथ्वी से लड़ती हैं॥

घर का लगा पनारा बहने। थल पर आया सागर रहने।
देखो जहाँ वहीं है पानी। आही फँसी कीचड़ में नानी॥

पृथ्वी ने पहनी हरियाली। बहती ठण्ढी हवा निराली।
बजा रहे हैं बादल ताली। मन में होती है खुशियाली॥

यह काग़ज़ की नाव बनाकर। लड़के डाल रहे नाले पर।
टर्र टर्र मेढक चिल्लाते। देखो कितना शोर मचाते॥

इन्द्रधनुष उगता है नभ पर। बड़ा रँगीला प्यारा सुन्दर।
चमकी बिजली किसने देखा। खिँचकर मिटी स्वर्ण की रेखा॥

अब यदि कोई बाहर सोवे। बादल चुपके आन भिगोवे।
अब यदि कोई पतँग उड़ावे। ऊपर जाते ही गल जावे॥

बहुत दूध देती है गैया। पीकर बल आया है भैया।
आई बहुत बदन में चुस्ती। चलो अखाड़े में हो कुश्ती॥

सोहनलाल द्विवेदी

जापानी मुर्ग़ा

जापानी मुर्ग़ा बड़ा सुन्दर और अजीब होता है। लङ्गूर को अपनी लम्बी दुम का अभिमान होता है। पर यदि वह जापानी मुर्ग़े की दुम देखे तो उसे लज्जित होना पड़ेगा। संसार में शायद ही कोई ऐसा जीव हो जिसकी दुम इतनी लम्बी हो। इस चित्र में जो मुर्ग़ा खड़ा है उसकी दुम के पंख १८ फ़ीट लम्बे हैं। इसमें शक नहीं कि यह सबसे ज़्यादा लम्बी दुम का मुर्ग़ा है। आमतौर पर जापानी मुर्ग़ों की दुम १२ या १३ फ़ीट तक लम्बी होती है। इस मुर्ग़े की दुम खुली है। पर जैसे स्त्रियाँ अपने बाल बाँधती हैं वैसे ही जापानी लोग इन मुर्ग़ों की दुमों को लपेट कर बाँध रखते हैं और बहुत कम खुलने देते हैं। सच बात तो यह है कि वहाँ के निवासियों की कोशिश से ही मुर्ग़ों की दुमें इस प्रकार बढ़ती हैं।
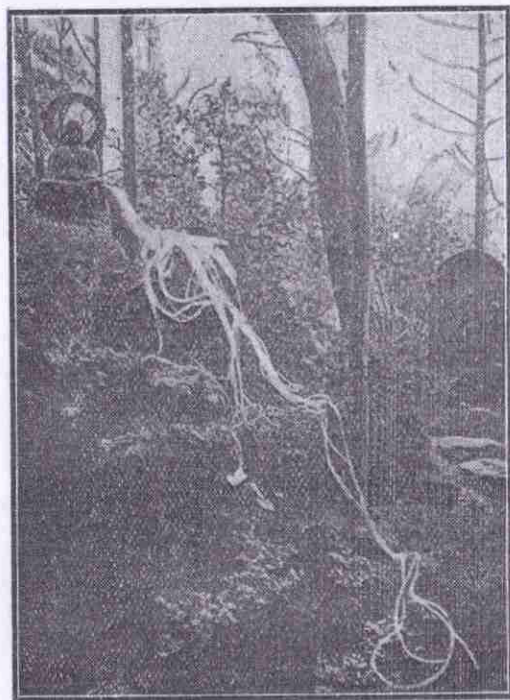
जापानी मुर्ग़ा

यदि यह बात न होती तो लम्बी दुम के मुर्ग़े झाड़ियों में उलझ कर या तो मर जाते या उनकी दुमें टूट कर छोटी हो जातीं। पर जापानी लोग अपना

[illegible] आदमियों से नहीं बताते शायद इसी से यह उपाय अब तक किसी [illegible] हो सका। जापान में बौद्ध-धर्म फैलने के समय से मुर्ग़ों की [illegible] बढ़ाने की बात पाई जाती है। सम्भव है यह प्रथा और भी [illegible]

शम्भुनाथ शुक्ल, बी० ए०

एक गुरु के शिष्य

शिष्य एक गुरु के हैं हम सब एक पाठ पढ़नेवाले।
एक फ़ौज के वीर सिपाही एक साथ बढ़नेवाले॥
धनी-निर्धनी ऊँच-नीच का हममें कोई भेद नहीं।
एक साथ हम सदा रहें तो हो सकता कुछ खेद नहीं॥
हर सहपाठी के दुख को हम अपना ही दुख जानेंगे।
हर सहपाठी को अपने से सदा अधिक प्रिय मानेंगे॥
अगर एक पर पड़ी मुसीबत दे देंगे सब मिलकर जान।
सदा एक स्वर से सब भाई गायेंगे स्वदेश का गान॥

'श्रीश'

बादलों में बिजली का खेल

हम जितनी चीज़ें देखते हैं, उनमें बिजली की चमक सबसे अजीब है। वह बात की बात में आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक टेढ़ी मेढ़ी रेखा सी खिँचकर मिट जाती है। क्या तुम बता सकते हो कि वह क्यों चमकती है ?

पहले लोग सोचा करते थे कि इन्द्र देवता पाताललोक पर वज्र चलाते हैं। बिजली उसी की चमक है। और जो बादल गरजता है वह उसी की आवाज़ है। पर अब लोग ऐसा नहीं समझते। अब उन्हें बिजली के चमकने और बादल के गरजने का कारण मालूम हो गया है।

तुम यह तो जानते ही होगे कि बादल पानी की बहुत सी छोटी छोटी बूँदों से बना होता है। ये बूँदें जब ऊपर चढ़ती हैं तो अपने साथ थोड़ी थोड़ी बिजली भी लिये जाती हैं। ऊपर पहुँच कर ये छोटी बूँदें आपस में मिलने लगती हैं और उनकी बड़ी बड़ी बूँदें बनती जाती हैं। इस तरह उनके चारों तरफ़ जो बिजली रहती है उसको कम जगह मिलती है जिससे उसे सिकुड़ना पड़ता है। और वह जल उठती है। यही बिजली का चमकना है। जलने पर बिजली आग से भी ज़्यादा गरम हो उठती है। इतनी गरम कि वह बात की बात में लोहा, सोना आदि धातुओं को गला कर पानी कर सकती है। बिजली की इस गरमी से हवा को बड़ी तेज़ी से फैलना पड़ता है। हवा के एकाएक तेज़ी से फैलने और फिर अपने स्थान पर वापस आने से भारी गड़गड़ाहट की आवाज़ होती है। वही बादल का गर्जना है।

तुमने यह देखा होगा कि बादल, बिजली के चमकने के कुछ देर बाद गरजता है। इसका कारण यह है कि रोशनी की चाल आवाज़ की चाल से कई गुने तेज़ होती है। इसलिए बिजली को तो हम जल्दी देख लेते हैं पर आवाज़
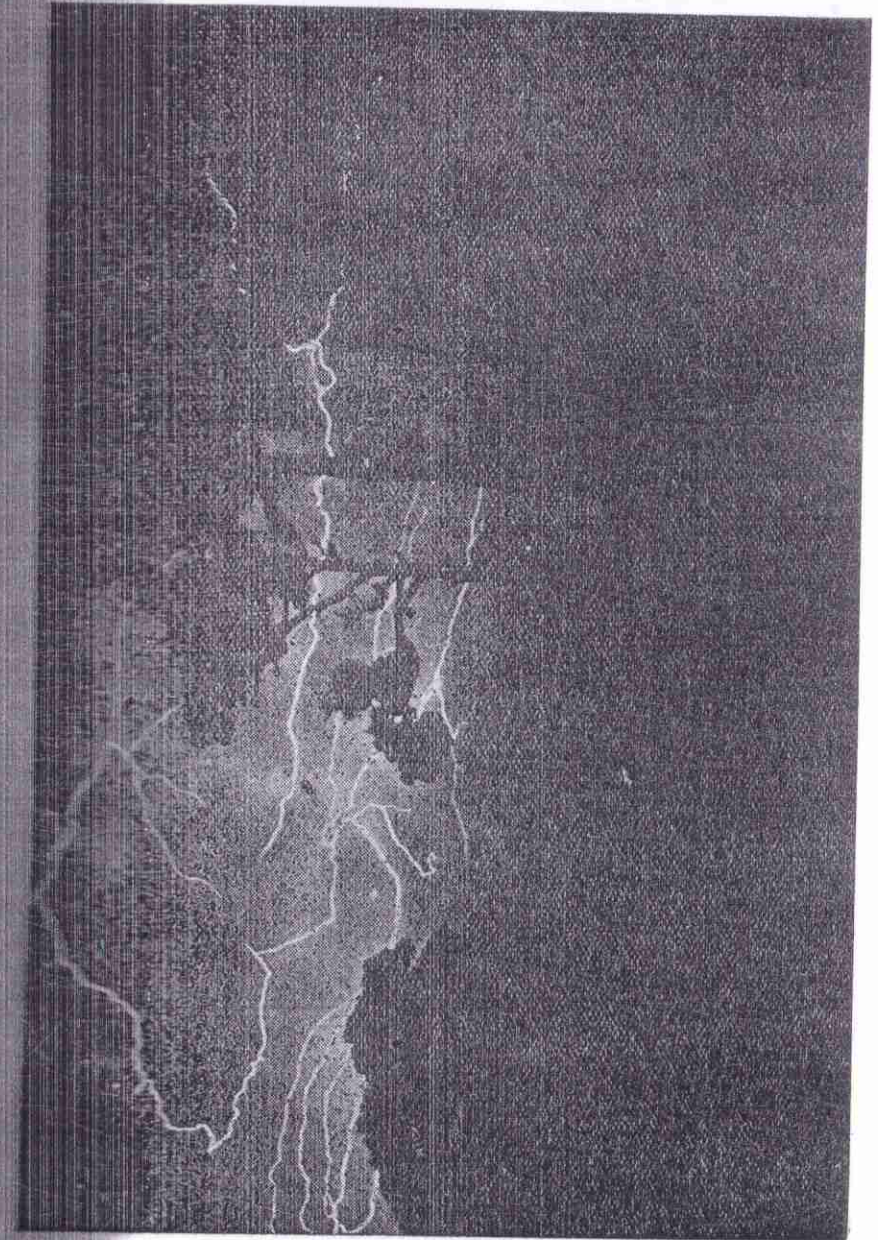
अँधेरी रात में लिया गया बिजली का चित्र

देर में सुन पड़ती है जितनी दूरी पर बिजली चमकेगी उतनी ही देर बाद गरज सुनाई पड़ेगी।

बिजली गिरने से यह पेड़ बीच से फट गया है
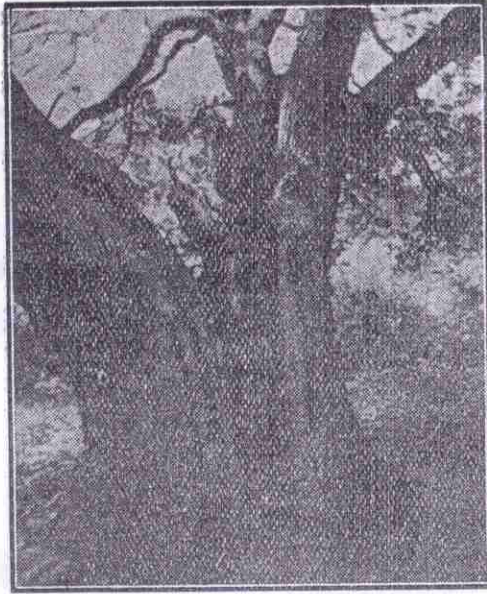
बिजली से जान का ख़तरा रहता है। ऊँचे या अकेले पेड़ों पर बिजली जल्दी उतर आती है। इसलिए ऐसे अवसरों पर भारी या जो पेड़ निराले में हों उनके नीचे न खड़ा होना चाहिए। बिजली से ऊँची इमारतों के भी ढह जाने का भय रहता है। इसलिए उनमें लोहे या ताँबे के छड़ लगा देते हैं। जो ऊपर हवा में निकले रहते हैं और नीचे पृथ्वी में धँसे रहते हैं। ऐसी इमारतों पर बिजली का असर नहीं होता क्योंकि वह छड़ के द्वारा पृथ्वी में समा जाती है।

चुटकुला

लड़की ने कहा—"माँ छोटे भैया के दाँत में दर्द न होकर तुम्हारे दाँत में होता तो अच्छा था।"

माँ बोली—"क्यों?"

लड़की ने जवाब दिया—"क्योंकि तुम अपने दाँत मुँह से बाहर निकाल लेती हो पर भैया नहीं निकाल सकता।"

कुछ इधर उधर की

१—पुत्र का त्याग

भारतवर्ष के एक शहर में एक जौहरी रहता था। वह बहुमूल्य हीरा-पन्ना आदि जवाहरात बेचा करता था। उसके जवाहरातों की क़दर सारे संसार में फैल गई थी। बड़े बड़े राजा-महाराजा उसके यहाँ जवाहरात ख़रीदने आया करते थे।

एक दिन एक अँगरेज़ हार ख़रीदने को आया। उसने जौहरी से कहा, 'मेरी शादी हो गई है मैं अपनी पत्नी को एक हार भेंट देना चाहता हूँ। इसलिए कृपया आप मुझे अपने यहाँ के क़ीमती हार दिखलाइए। जौहरी ने उसे वहाँ रखे हुए सब हार दिखलाये परन्तु उसने कहा—"क्या तुम्हारे पास इससे अच्छे हार नहीं हैं? जौहरी ने उत्तर दिया, "साहब! वे चोरी के भय से भीतरी कोठे के सन्दूक में रख दिये गये हैं। मैं उन्हें शीघ्र ही लाता हूँ तब तक आप यहीं ठहरिए।"

थोड़ी देर में जौहरी ख़ाली हाथ लौट आया। तब साहब के पूछने पर कि उसने अपने क़ीमती हार क्यों नहीं दिखाये? जौहरी ने कहा—"जिस कोठे में वे जवाहरात रखे हैं, वहाँ मेरे पिताजी सो रहे हैं। यदि मैं सन्दूक खोलूँगा, तो

शायद वे जाग उठें। उस अँगरेज़ ने जौहरी से कहा कि तुम जितना रुपया माँगो मैं देता हूँ मुझे वह हार की पेटी दिखला दो। परन्तु जौहरी ने उत्तर दिया—"मैं रुपयों के लिए अपने पिता को कष्ट नहीं दे सकता। कृपया आप दूसरे दिन आइए।" वह अँगरेज़ लाचार होकर चला गया।

उत्तमचन्द्र श्रीवास्तव

२—छाते में खिड़की

जर्मनी में यह एक नये ढङ्ग का छाता तयार हुआ है। इसको आप कड़ी से कड़ी बरसात में लेकर चल सकते हैं और अपना रास्ता भी देख सकते हैं। खिड़की में अभ्रक लगा है।

३—अब कैसे तोड़ेंगे ?

छोटे बच्चे दूध पिलाने की शीशी को छोड़ दिया करते थे जिससे वह गिर कर टूट जाती थी। एक कारीगर ने ऐसी शीशियों को पकड़ने के लिए एक स्प्रिंग बनाया है। अब बच्चा शीशी को छोड़ देगा तो भी वह न गिरेगी।

४—गधा कहाँ है ?

कुम्हार का गधा [illegible] जङ्गलों में खो [illegible] है। बताओ कहाँ [illegible] मजा यह है कि [illegible] बार देख लेगा [illegible] गधा हमेशा [illegible] देगा।

[illegible]प्रसाद पाठक
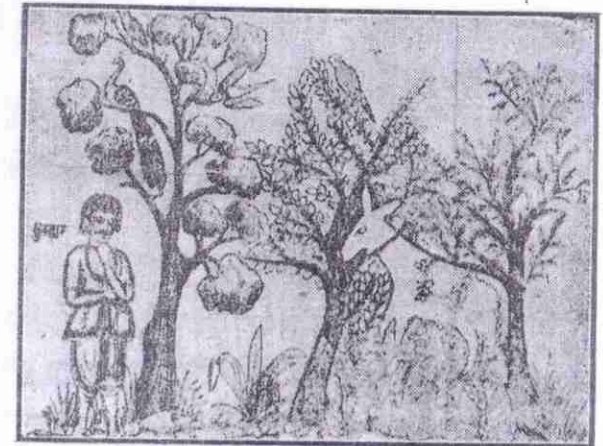
मनोविनोद

१—जोड़

मास्टर—जोड़ किसे कहते हैं ?

लड़का—जब दो बराबर की चीज़ें मिलाई जाती हैं ।

मास्टर—जब चीज़ें बराबर न हों ?

लड़का—उसे बेजोड़ कहते हैं ।

२—घटाना

मास्टर—घटाना किसे कहते हैं ?

लड़का—किसी चीज़ के कम करने को ।

मास्टर—कोई उदाहरण दे सकते हो ?

लड़का—जी हाँ, जैसे स्कूल में पढ़ना ।

मास्टर—क्यों ?

लड़का—यह नज़र को कम करता है ।

३—गुणा

मास्टर—गुणा क्या चीज़ है ?

लड़का—कोई जाति होगी ।

मास्टर—कैसे ?

लड़का—जैसे बहुगुणा ।

४—भाग

मास्टर—भाग किसे कहते हैं ?

लड़का—बड़ी बहू को ।

मास्टर—क्या बकता है ?

लड़का—बड़ी बहू बड़े भाग ।

नन्दन बी० ए०

हमारी डाक
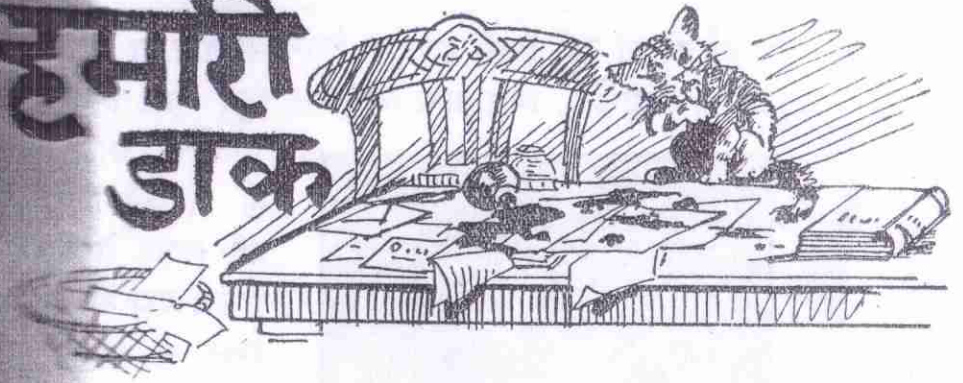
[illegible]जनौर से श्रीयुत वी० पी० श्रीवास्तव लिखते हैं—"आपके लालसखा [illegible] लिखते हैं । जाड़ा भी ख़ूब लिखा और गर्मी भी । मालूम होता है उनके [illegible] के सामने कोई भड़भूजा ज़रूर रहता है जिसको वे हमेशा याद करते हैं ।" [illegible]वास्तव तुमने जो लिखा है लालसखाजी उसे स्वीकार करते हैं । पर [illegible] अनुमान है कि तुम्हारे मकान के सामने भी कोई न कोई भड़भूजा ज़रूर [illegible] । नहीं तो तुम इस सत्य को कैसे समझते ।

× × ×

[illegible] से श्रीयुत पुरुषोत्तमदास ननैारिया लिखते हैं—"मैंने बाल-सखा में [illegible] भागनेवाला लड़का शीर्षक कहानी पढ़ी । मैं तो ख़ूब दूध पीता हूँ पर [illegible] है कि मैं दुबला हूँ । मुझको डर लगता है कि कहीं मैं भी हवा में उड़ न [illegible] । मैं दूध पीने पर भी क्यों दुबला हूँ ।" प्रिय पुरुषोत्तमदास ! शायद तुम [illegible] हो । जो आदमी दूध पीने से मोटे नहीं होते उन्हें ख़ूब हँसना भी [illegible] हमेशा प्रसन्न रहो, ग़ुस्सा न करो और रोज़ हँसो ज़रूर मोटे हो जाओगे ।

× × ×

[illegible] बार हम श्रीमती विनोदबाला देवी का चित्र अपने छोटे पाठकों के [illegible] उपस्थित कर रहे हैं । विनोद की उम्र इस समय ७½ वर्ष की है । जब ये

४ वर्ष की थीं तभी इनकी माता का देहान्त हो गया था। इससे ये अपने नि[illegible] हाल में रहती हैं! इनके नाना आदि इन्हें बहुत प्यार करते हैं। यदि ऐसा [illegible] होता तो छोटी बालिका अप[illegible] मा के वियोग को कैसे सहती[illegible] बाल-सखा से और उसके पाठ[illegible] से इन्हें बड़ा प्रेम है। आओ हम स[illegible] ईश्वर से प्रार्थना करें कि [illegible] वह इस बालिका को सदैव प्रस[illegible] रक्खे।

श्रीमती विनोदबाला देवी
(मसूरी—१४—६—२८)

× × ×

सिवनी से रामगोपाल अग्निहो[illegible] लिखते हैं—"मेरा छोटा भाई हमे[illegible] 'बाल-सखा' लिये रहता है। ज[illegible] कभी कोई उससे वह मन लुभा[illegible] वाली पुस्तक छीन लेता है तब [illegible] अले मेली बाल-सखा" कह [illegible] बहुत रोता है।

× × ×
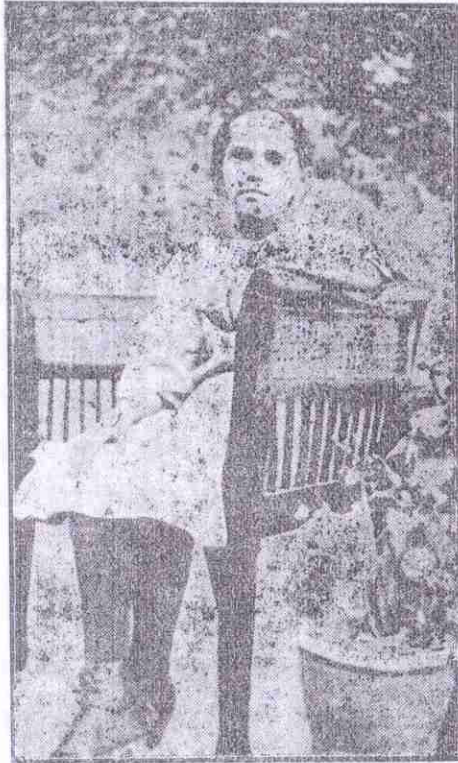
इन पत्रों के अलावा [illegible] कितनी ही पुस्तकें भी समाल[illegible] चनार्थ प्राप्त हुई हैं। इनमें प्रतिबिम्ब, मीठी चुटकी और हृदय का काँटा ये [illegible] पुस्तकें हमें बहुत पसन्द आईं। प्रतिबिम्ब कविता-पुस्तक है इसके लेखक[illegible] विज्ञान-सम्पादक श्रीसत्यप्रकाश विशारद, एम० एस०-सी०। शेष दो उपन्य[illegible] हैं। देखने में बहुत अच्छे लगते हैं।

प्रश्न-पहेली
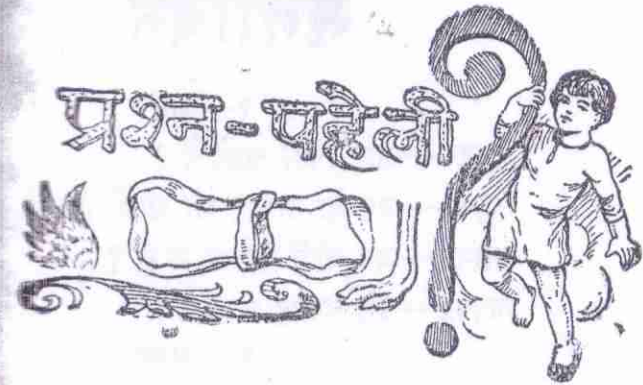
[illegible]५) का नक़द पुरस्कार

पहला पुरस्कार २)

[illegible] (क)—एक तमाशा देखा प्रात।
नाच उलट के घोड़ा खात॥

(ख)—घूम घुमाला लहँगा पहने एक पाँव से रहे खड़ी
आठ हाथ हैं उस नारी के है गुणदायक बड़ी खरी॥

लक्ष्मीकुँवर

[illegible] इन दोनों पहेलियों को बूझेंगे उनमें से सर्वप्रथम को बाई साहेब [illegible] (देवगढ़) की ओर से २) रुपये का नक़द पुरस्कार मिलेगा।

दूसरा पुरस्कार २)

[illegible] (क)—कौन तत्त्व या जगत में जो ठहरे छिन नाहिं।
भ्रमै चराचर जीव सब बन्ध मोक्ष वश ताहि॥

(ख)—शुक्र वर्ण कल कल करत पान करत अघ जात।
हिन्दु जनन जननी अहैं हिन्द देश विख्यात॥

सरस्वती देवी

[illegible] दोनों पहेलियों पर श्रीमती सरस्वती देवी मौरावाँ की ओर से २) का [illegible] पुरस्कार मिलेगा।

तीसरा पुरस्कार १)

३—हिन्दुस्तान के वर्तमान नेताओं का नाम बताओ ?

इस प्रश्न का सबसे ठीक उत्तर भेजनेवाले को रामसेवक नागर (चौक प्रयाग की ओर से १) रुपये का नक़द पुरस्कार मिलेगा।

पुस्तक-पुरस्कार

(४) तुम्हारे घर या पड़ोस में जो सबसे दिलचस्प आदमी हो उसका कुल हाल लिखो ?

नोट (१) हर एक लड़के को ऊपर लिखे प्रश्नों में से किसी एक का जवाब भेजना चाहिए

(२) जो सब प्रश्नों का जवाब भेजेंगे उनके सिर्फ़ सबसे कम पुरस्कारवाले प्रश्न पर विचार होगा

(३) उत्तर भेजने का पता—सम्पादक बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

जून १९२८ के प्रश्नों के उत्तर

(१) बादल (२) टोपी (३) १७ (४) एक दिन टीपू हौज़ के पास सोया था वत्तखों के चांव चांव से जग उठा और उनको खाने दौड़ा। तब तक उनकी मा आगई। वह खोल कर टीपू को काटने दौड़ी। टीपू बेचारा डर से हांफता हुआ दुम दबा कर भाग गया।

जगतभूषण

नीचे लिखे बालक-बालिकाओं की हम बड़ी तारीफ़ करते हैं। इन सबों ने बड़ी सावधानी जवाब लिखे हैं। हमें विश्वास है कि बड़े होने पर ये बहुत अच्छे लेखकों में गिने जायँगेः—

मनसुखलाल, गोटेगाँव। प्रकाशचन्द्र*हिसार। प्रहलाद शर्मा, झरिया। कैलाशीदेवी, बनारस श्रद्धानन्द सित्तल, मेरठ। सरोजनीदेवी पंत* देवरिया। द्वारकादास, बनारस। रामगोविन्दप्रसा सहँतवार। सरस्वतीदेवी, मौरावाँ। ज्ञानपाल सेठिया, बीकानेर। शशिकान्ता विष्णुमित्रवेदी धार। रघुनाथप्रसाद शर्मा, मसूदा। जगतभूषण गुप्त, काशी। ओंप्रकाश बधावन, लखनऊ नन्दलाल खन्ना, कानपुर। उर्मिलादेवी, कानपुर। सरलादेवी, मेरठ। कुमारी देवी, नाथनगर महेश्वरीदयालसिंह, इसमाइलपुर। रामेश्वरीदेवी, लखनऊ। राजेन्द्रसरन माथुर, अमरोहा श्रीराम अग्रवाल, भरतपुर। पेम्बा लामा, दार्जिलिङ्ग। प्रेमप्रकाश अग्रवाल, नैनीताल। प्रभा नाथनगर। वैकुण्ठनाथ, बहराइच। जयदेवी जैन, मथुरा। राजरानी ग्रोआ, फ़िरोज़पुर। इन्द्र प्रसाद, दरभङ्गा। मनमोहन देवी, गोरखपूर। हरिहरप्रसाद, सतना। बुद्धनराम माहुरी, करके बाज़ार।

---

*इनको इनाम दिया गया—सं०

Printed and Published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd., Allahabad.